रिपोर्ट

श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, कालडी, केरल

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

हिन्दी नाटकों में आदिवासी जनजीवन

उद्घाटन सत्र

दिनांक :- 24मार्च,2025

समय :- 09:30am से 01:00pm तक

स्थान :- सभागार, लैंग्वेज ब्लॉक

श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, कालडी के नेतृत्व में 24 एवं 25 मार्च 2025 को **'हिंदी नाटकों में आदिवासी जनजीवन'** विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी संपन्न हुई।

दिनांक 24 मार्च, को संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र का संचालन विभाग के शोधार्थी अमृता पी. एस. ने किया। इस सत्र में हिंदी विभाग के सहायक आचार्य डॉ. अच्युतानंद मिश्र ने स्वागत भाषण दिया। हिंदी विभाग की अध्यक्षा और आचार्या डॉ. सुनीता गोपालकृष्णन ने संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए **आदिवासी जीवन**, **आदिवासी चिंतन एवं दर्शन**, **आदिवासी साहित्य, आदिवासी जीवन की विभिन्न शोषण की व्यवस्थाएं**

एवं संघर्ष, **भारत के विभिन्न आदिवासी जनजातियों**, **उनके नृत्य, कला एवं संगीत**, **हिंदी एवं हिंदीतर प्रदेशों में लिखे गए आदिवासी नाटक** आदि के बारे में विस्तार से बात की।

कोच्चि विश्वविद्यालय के भूतपूर्व आचार्य **डॉ० शमीम अलियार** ने संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए **आदिवासी समुदाय के रहन-सहन**, **आदिवासी समाज में व्याप्त अशिक्षा**, उनके भोलेपन, **वर्तमान राजनीति का आदिवासी समाज पर साजिशें** आदि पर अपने विचार प्रकट किए। कुछ भारतीय एवं पाश्चात्य नाटक, नाटककार और फिल्मों का उल्लेख करते हुए **साहित्य और सिनेमा में आदिवासी जीवन के विभिन्न पहलुओं की अभिव्यक्ति** पर अपना विचार प्रस्तुत किया।

अलीगढ़ विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलसचिव **डॉ. वी. के. अब्दुल जलील**, सुप्रसिद्ध नाटककार एवं रंगकर्मी **अनिल रंजन भौमिक**, सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं सामाजिक कार्यकर्ता **वंदना टेटे**, यूनिवर्सिटी कॉलेज तिरूवनंतपुरम के **प्रोफेसर बी. अशोक** आदि विशिष्ट अतिथियों ने अपने स्नेहपूर्ण शब्दों में आशीर्वाद दिया।

कवयित्री वंदना टेटे ने इस सत्र का बीज वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए **आदिवासी रंगमंच और नाटक** पर विस्तार से भाषण दिया। **प्रकृति एवं पर्यावरण के साथ आदिवासियों का घनिष्ठ संबंध**, अपने अधिकारों के लिए **आदिवासियों द्वारा किए जाने वाले संघर्ष**, **मुख्यधारा समाज का आदिवासियों पर हीनतम दृष्टिकोण** आदि पर अपना विचार

प्रकट किया। उन्होंने नाटकों के उद्भव का उल्लेख करते हुए भारतमुनि के नाट्यशास्त्र, कालिदास, भास, अश्वघोष जैसे कुछ प्राचीन नाटककारों का उल्लेख किया और इन नाटकों से भिन्न आदिवासी नाटकों की विशेषता, लोक कथाओं का आदिवासी नाटकों पर प्रभाव आदि पर विस्तार से बात की। हिंदी विभाग के शोधार्थी वैष्णव एन. यू. ने सबको विभाग की ओर से धन्यवाद अदा किया।

<u>प्रथम सत्र</u>

दिनांक :- 24मार्च,2025

समय :- 02:00pm से 04:00pm तक

स्थान :- सभागार, लैंग्वेज ब्लॉक

विषय :- **आदिवासी जनजीवन में रंगमंच**

संगोष्ठी के प्रथम सत्र का संचालन शोधार्थी एन. के. शिष्णा प्रकाशन ने किया। स्नातकोत्तर विद्यार्थी नैना जोसफ ने स्वागत भाषण दिया। कोच्चि विश्वविद्यालय के भूतपूर्व प्रोफेसर **आर. शशिधरन** ने अध्यक्षता करते हुए **आदिवासी जनजीवन विषय की प्रासंगिकता**, **आदिवासी साहित्य का जनतंत्र**, **आदिवासियों की पहचान का संघर्ष**, **आदिवासियों की भाषा** आदि पर संक्षिप्त रूप में अपने विचार रखे। **केरल के करिंदंडन जैसे आदिवासी चरित्रों** का उल्लेख किया।

बाद में इस सत्र में कोच्चि विश्वविद्यालय के अध्यापक **डॉ. अनीश के. एन.** ने प्रस्तुत विषय में अपना विचार प्रकट किया। **आदिवासी समाज में व्याप्त अंधविश्वास**, **अशिक्षा**, **नशे का उपयोग**, **आदिवासी बच्चों की असुरक्षा**, **आदिवासी समाज में बढ़ती मातृ मृत्यु दर एवं बाल मृत्यु दर की संख्या**, इन बातों पर प्रकाश डालते हुए हिंदी और मलयालम के कुछ प्रसिद्ध आदिवासी नाटकों के बारे में विस्तार से बात रखी।

इस सत्र के अंत में श्री वंदना टेटे ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। अपने वक्तव्य में वंदना जी ने भारत के प्रदेशों में बसे विभिन्न आदिवासी जातियों पर विस्तार से प्रकाश डाला, इन जातियों के रंगमंच की विशेषताओं के बारे में भी अपना विचार रखा। इस सत्र के अंत में विद्वजनों और शोधार्थियों के बीच चर्चाएं हुईं। विभाग के शोधार्थी श्री लक्ष्मी के. एस. ने सबको धन्यवाद अदा किया।

संगोष्ठी के बाद विभाग के विद्यार्थियों और शोधार्थियों की सहभागिता द्वारा और शोधार्थी शरद कुमार झारिया के निर्देशन में '**जननायक बिरसा**' नाटक की प्रस्तुति हुई।

द्वितीय सत्र

दिनांक :- 25 मार्च, 2025

समय :- 09:30am से 11:30am तक

स्थान :- सभागार, लैंग्वेज ब्लॉक

विषय :- **नाटक पाठ और रंगमंचीयता**

संगोष्ठी के दूसरे सत्र का विषय है - 'नाटक पाठ और रंगमंचीयता'। इस सत्र का संचालन विभाग के शोधार्थी अश्वति अनीश ने किया। स्नातकोत्तर विद्यार्थी अंशा ज़फरीन ने स्वागत भाषण दिया। दक्षिणरत हिंदी प्रचार सभा एर्नाकुलम के वरिष्ठ अध्यापक एवं लेखक **डॉ. संजय लक्ष्मण मिश्रा** ने अध्यक्ष भाषण देते हुए **समकालीन हिंदी नाटक और रंगमंच** के बारे में अपना विचार प्रकट किया। साथ ही साथ **आदिवासी समुदाय के जीवन-दर्शन**, रहन-सहन, **उनके जीवन में बाहरी हस्तक्षेप**, **आदिवासी दर्शन के मूल में निहित क्रांतिकारी विचारधारा**, **प्रकृति एवं पर्यावरण को बचाने हेतु आदिवासियों का प्रयास**, **आदिवासी साहित्य की यथार्थवादिता का गुण** आदि विषयों पर गंभीरता से प्रकाश डाला।

बाद में **अनिल रंजन भौमिक** ने अपना वक्तव्य दिया। नाटक का पाठ कैसे करें? इस पर उन्होंने अपना विचार प्रकट किया। उन्होंने इस सत्र को अधिक व्यावहारिक और मनोरंजक बनाने हेतु अभिनय करके दिखाया और छात्रों की सहभागिता भी बरकरार रखी। उन्होंने **अभिनय के चार अंग**, **संवाद बोलने के नियम**, **बोलते वक्त अंगों के विभिन्न चाल-चलन की अनिवार्यता**, **रस और भाव का संबंध**, **रस और भाव का महत्व** आदि पर विस्तार से बात की।

बाद में सरकारी आर्ट्स एंड साइंस कॉलेज कोषिक्कोडु के सहायक आचार्य डॉ. आनंद टी. ए. ने विभिन्न आदिवासी नाटकों और नाटककारों पर विस्तार से वक्तव्य दिया। प्रस्तुत सत्र के बाद विद्वानों और शोधार्थियों के बीच चर्चाएं हुईं। विभाग के स्नातकोत्तर विद्यार्थी विष्णु संजीवन ने सबको धन्यवाद अदा किया।

<u>तृतीय सत्र</u>

दिनांक :- 25 मार्च, 2025

समय :- 11:30am से 01:00pm तक

स्थान :- सभागार, लैंग्वेज ब्लॉक

विषय :- **प्रपत्र प्रस्तुति**

संगोष्ठी के तीसरे सत्र का संचालन विभाग के शोधार्थी गीतू ई. एस. ने किया। शोधार्थी अंजलि ई. एन. ने स्वागत भाषण दिया। इस सत्र में कलीकट विश्वविद्यालय के सहायक आचार्य **डॉ. शिबी सी.** ने अध्यक्षता करते हुए आदिवासी रंगमंच की विशेषताओं पर संक्षिप्त रूप से अपना मत प्रकट किया। उसके बाद विभाग की **शोधार्थी मनीषा के. एस.** ने **'नाटकों में आदिवासी जनजीवन एवं सदियों का संघर्ष; नाट्टू गद्यिका और अग्नि तिरिया के विशेष परिप्रेक्ष्य में'** विषय पर प्रबंध प्रस्तुत किया। विभाग की **शोधार्थी षामिला षाजी** ने **'गैर आदिवासी नाटकों में आदिवासी**

संघर्ष' विषय पर प्रबंध का अवतरण किया और **शोधार्थी शरद कुमार झारिया** ने **'हिंदी नाटकों में आदिवासी जीवन दर्शन: धरती आबा नाटक के विशेष संदर्भ में'** विषय पर अपना मौलिक विचार प्रस्तुत किया। इसके बाद विद्वानों और विद्यार्थियों के बीच चर्चाएं हुईं। विभाग की शोधार्थी गोपिका ने सभी को धन्यवाद अदा किया।

चतुर्थ सत्र

दिनांक :- 25 मार्च, 2025

समय :- 02:00pm से 04:00pm तक

स्थान :- सभागार, लैंग्वेज ब्लॉक

विषय :- **नाटक की समकालीनता और भविष्य**

संगोष्ठी का चौथा और अंतिम सत्र का विषय था - **'नाटक की समकालीनता और भविष्य'**। इस सत्र का संचालन विभाग के शोधार्थी ऐश्वर्या कृष्णनकुट्टी पी. वी. ने किया। स्वागत भाषण शोधार्थी दिव्या रामचंद्रन ने दिया। इस सत्र की अध्यक्षता का भार **डॉ. आर. शशिधरन** ने संभाला और **केरल के प्रसिद्ध नाट्य मंडलियों के बारे** में बताया। उन्होंने देखे गए नाटकों के साथ-साथ कुछ पाश्चात्य नाटक और नाटककारों पर भी प्रकाश डाला। इस सत्र के अंतिम वक्ता कोच्चि विश्वविद्यालय की

विभागाध्यक्षा एवं आचार्या **डॉ० पी. प्रणीता** थीं। उन्होंने **हिंदी नाटक की चुनौतियों एवं संभावनाओं** पर अपना वक्तव्य दिया। अंत में **अनिल रंजन भौमिक** ने हिंदी **नाटक के उज्ज्वल भविष्य की संभावनाओं को लेकर** भाषण देते हुए संगोष्ठी को समाप्त किया। विभाग की शोधार्थी मनीषा के. एस. ने सभी को धन्यवाद अदा किया।